आपने लिखा

मैं संदर्भ के पुराने मित्रों में से एक हूं और निरन्तर अपना ज्ञानवर्धन कर रहा हूं। विगत आठ वर्षो से मेरा और मेरे साथियों का ज्ञानवर्धन करने के लिए मैं आपका शुक्रगुज़ार हूं। मैंने इसी वर्ष कक्षा 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा आई.आई.टी. के लिए जॉइन्ट एन्टरेंस एग्ज़ामिनेशन की तैयारी कर रहा हूं।

संदर्भ का अंक 45 प्राप्त हुआ। 'गैलिलियो का दोलक' तथा 'आइसोटोप और आवर्त्त नियम' जैसे लेखों ने मेरी परीक्षा की तैयारी में काफी मदद की। 'कुछ यादें शांति निकेतन' की बहुत पसंद आया तथा कहानी 'उड़ाने वाली पतंग' ने अच्छा मनोरंजन किया।

मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि क्या पाठकों के लेख तथा कुछ विषयों पर उनके विचार संदर्भ में प्रकाशित होने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं? कृपया इसका उत्तर दें। वर्तमान में संदर्भ की कमियों में मौलिक लेखों का अभाव तथा समय पर प्रकाशित न होना प्रमुख हैं। आशा है आप इन त्रुटियों को दूर करने का हर संभव प्रयास कर रहे होंगे।

विकास जैन, हरदा, म. प्र.

मैं संदर्भ का नया पाठक हूं। यह एक बहुत ही अच्छी और ज्ञानवर्धक पत्रिका है। संदर्भ में ज्ञान-विज्ञान से संबंधित कई लेख प्रकाशित होते हैं जैसे अंक-43 में 'पाठ्यक्रम निर्माण के विविध आयाम' और 'विज्ञान की पढ़ाई में कला का स्थान' दोनों लेख अपने अन्दर बहुत अधिक जानकारी समेटे थे। अंक-44 में 'हम घास क्यों नहीं खाते' और 'चालक पॉलिमर्स' लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक थे।

मैं पिछले 5 साल से शिक्षण कार्य से जुड़ा हूं और मैंने ये देखा है कि बच्चों की रुचि गणित व विज्ञान विषयों में कम होती जा रही है। बच्चों में इन विषयों के प्रति रुचि को कैसे जागृत किया जाए इसके बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा लेख प्रकाशित करें। आपकी पत्रिका की नियमितता खत्म होती जा रही है। कभी अंक चार महीने में या कभी छह महीने में प्राप्त होता है, कृपया पत्रिका को द्वैमासिक ही रखने का प्रयत्न करें।

नरेन्द्र सिंह (शिक्षक)
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

एक मित्र के यहां संदर्भ से मेरी पहली मुलाकात हुई। अब मैं ही नहीं पूरा परिवार नियमित पाठक हैं। उड़ीसा जैसे राज्यों में हिन्दी की किताबों की उपलब्धता न के बराबर है एवं जिन विषयों पर संदर्भ में लेख मिलते हैं उन पर हिन्दी में बहुत कम ही लिखा जाता है।

बचपन से ही गणित मेरा प्रिय विषय है, इसलिए सर्वप्रथम ज़रा सिर खुजलाने की कोशिश करता हूं। सभी सवाल मज़ेदार होते हैं। उपहार पाने का शानदार मौका देकर आपने अच्छा किया। सभी सवाल सही होने पर भी कृपया मुझे 'समझ के

लिये तैयारी' नामक किताब ही भेजें, क्योंकि 'बच्चे असफल.....' मेरे पास है। आशा करता हूं संदर्भ अपनी पहचान कायम रखेगा। पाठक के अलावा और भी किसी रूप में संदर्भ परिवार से जुड़ना चाहता हूं।

अनूप अग्रवाल
बरगड़, उड़ीसा

संदर्भ का 45 वां अंक यद्यपि फरवरी-मार्च 2003 के लिए था परन्तु मिला जून के अन्तिम सप्ताह में। परन्तु संदर्भ के मुखपृष्ठ पर छपे दिल ने मेरे दिल को ऐसा मोहा कि सभी शिकवे-शिकायतें रफूचक्कर हो गए। वास्तव में इतना यथार्थ एवं सुस्पष्ट मॉडल, वह भी हृदय जैसे जटिल अंग का पहली बार देखा है। इसके लिए आप की जितनी भी तारीफ की जाए वह कम है। इस अंक के यूं तो सभी लेख ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं परन्तु मुझे 'नक्शों के साथ दोस्ती', 'सवालीराम' का जवाब, पाठ्यपुस्तकों की हिन्दी एवं कहानी बहुत अच्छे लगे। स्कूली पाठ्यक्रमों से लेकर आई.ए.एस. तक की परीक्षाओं में नक्शों पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं, परन्तु देखने में आता है कि जिन छात्रों ने भूगोल को एक विषय के रूप में पढ़ा हो उनके लिए भी नक्शे एक नीरस गतिविधि बनकर रह जाते हैं। कुछ अध्यापक बंधु भी नक्शों को अनावश्यक मानकर पाठ पढ़ाते हुए मानचित्र वाला पृष्ठ छोड़कर, आगे वर्णन पढ़कर सुना देते हैं और बच्चों के लिए नक्शों का महत्व धरा रह जाता है। इस लेख में प्रकाशित किए गए नक्शे वास्तव में बहुत ही आकर्षक एवं वास्तविकता को प्रकट करने वाले हैं।

सवालीराम ने दिल की धड़कन के बारे में जो जवाब दिया उसे पढ़कर मेरे दिल की धड़कन थम-सी गई। हृदय के कार्य करने की जटिल प्रक्रिया को बहुत ही सरल भाषा में समझाने का प्रयास सराहनीय है। मेरा एक सुझाव है कि आप संदर्भ का एक पृष्ठ विज्ञान के तकनीकी शब्द एवं परिभाषाएं समझाने के लिए आरक्षित कर दें, जिससे मेरे जैसे गैर-विज्ञान पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का भी भला हो सके।

कृष्ण कुमार जी का लेख 'पाठ्य पुस्तकों की हिन्दी' अत्यंत खोजपूर्ण एवं गहन विश्लेषण युक्त है। वे धन्यवाद के पात्र हैं। लेखक ने हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों पर परिस्थिति-जन्य प्रभावों का तार्किक विवेचन कर एक स्वस्थ बहस को जन्म दिया है। साथ ही इससे यह भी स्पष्ट हो रहा है कि हिन्दी का सर्वाधिक अहित हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों ने ही किया है। उन्होंने पाठ्यपुस्तकों को अपना दृष्टिकोण परोसने का एक साधन बना लिया। इससे हिंदी का भाषा तत्व गौण हो गया तथा सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक तत्व प्रधान हो गए जो कि नव-हिन्दी-प्रवेशी विद्यार्थी वर्ग के लिए एक

नीरस एवं बोझ युक्त कार्य साबित हुआ।

यह भी देखने में आया है कि प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तक लेखन के लिए ऐसे व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाता है जिन्होंने एक दो कविता-कहानी आदि लिखकर कवि या लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली है; परन्तु अध्यापक के रूप में उनका योगदान मात्र उपस्थिति-पंजी पर हस्ताक्षरों तक सीमित रहा हो।

राजस्थान में विगत 2-3 वर्षों से प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों को बदलने का दौर चल रहा है जिसमें कक्षा -1 की 'आनन्द पोथी' भाग 1 व 2 काफी बाल मनोविज्ञान के अनुकूल हैं, परन्तु शेष कक्षाओं की पुस्तकें उसी ढर्रे पर चली आ रहीं हैं जिनमें कोई भी नया प्रयास नहीं है। बस राजनीति के प्रतीक कुछ नारे व मुख्यमंत्री के नाम का प्रचार हर पुस्तक के पीछे ज़रूर आ गया है।

कहानी 'उड़ाने वाली पतंग' बच्चे की जिज्ञासु प्रवृत्ति को प्रकट करने वाली तो थी, साथ ही इससे यह भी ज्ञात होता है कि किस तरह बच्चों की बातों पर बड़ों को सहज ही विश्वास नहीं होता और बच्चे का उत्साह, जब उस पर अविश्वास हो तो किस तरह कुन्द हो जाता है।

रमेश जांगिड़ (शिक्षक)
भिरानी, राजस्थान

मैं इंजीनियरिंग तृतीय वर्ष का विद्यार्थी हूं। ज़रा सिर खुजलाइए की तरह के दिमाग को खुजलाने वाले सवालों की कमी महसूस होती है। यहां पर भी गणित के नाम पर कुछ सूत्रों से कुछ समस्याओं को हल करवाने के अतिरिक्त कुछ नहीं करवाया जाता। इस स्थिति में जहां समाज में रटना ही दिमाग का द्योतक है संदर्भ पत्रिका की पहल सराहनीय है।

लोकेश रणदिवे
इंदौर, म.प्र.

क्या है इसके मायने

47th issue Last issue

संदर्भ के वार्षिक सदस्यों के लिफाफे पर चिपकी पते वाली पर्ची पर ऊपर की तरफ लिखा होता है। यदि आपकी पर्ची पर लिखा है 47th issue (Last issue) तो उसका अर्थ है कि आपकी सदस्यता 47वें अंक पर खत्म हो रही है। इसलिए अंक 46 मिलते ही अपनी वार्षिक सदस्यता का नवीनीकरण करवा लीजिए।